Impact Factor (QJIF): 8.38 E-ISSN: 2583-7206, P-ISSN: 3049-2432

International Journal of All Subject Research

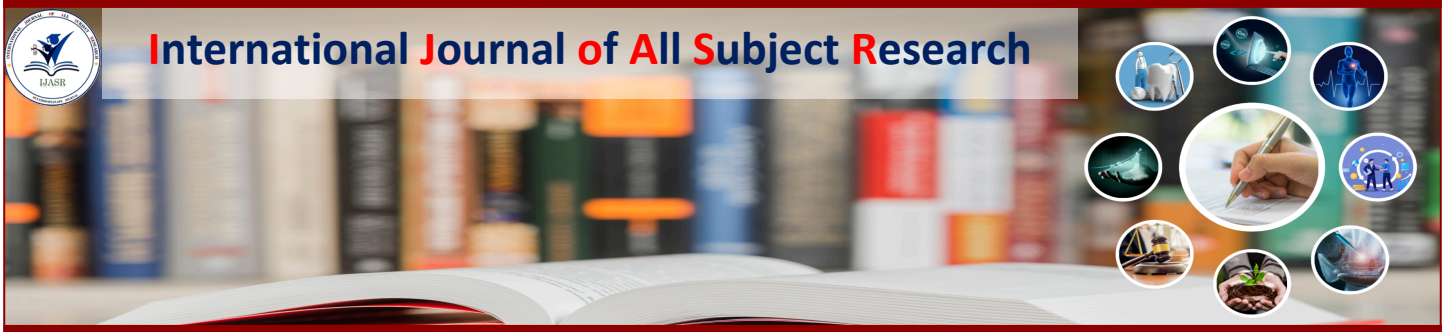

Received: 11/March/2026 **IJASR:** 2026; 5(3):25-28 **Accepted:** 18/April/2026

21वीं सदी के कौशल विकास में प्राचीन भारतीय दार्शनिक मूल्यों की प्रासंगिकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

***[1]मंजुलता गुप्ता और [2]डॉ. धारा श्री श्रीवास**

*[1, 2]सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावाँ, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र "21वीं सदी के कौशल विकास में प्राचीन भारतीय दार्शनिक मूल्यों की प्रासंगिकता" के अंतर्संबंधों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। समकालीन वैश्विक परिदृश्य में जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्वचालन और तीव्र तकनीकी परिवर्तनों ने 'कौशल' (Skills) की परिभाषा को बदल दिया है, वहीं मानवीय मूल्यों और मानसिक स्वास्थ्य का संकट भी गहराया है। यह शोध इस परिकल्पना पर आधारित है कि आधुनिक युग के अनिवार्य कौशल—जैसे आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking), रचनात्मकता, सहयोग और भावनात्मक बुद्धिमत्ता—प्राचीन भारतीय दर्शन के मूल सिद्धांतों में पहले से ही विद्यमान हैं।

अध्ययन के अंतर्गत उपनिषदों की 'नेति-नेति' पद्धति का आधुनिक तार्किक सोच के साथ, पतंजलि के 'अष्टांग योग' का तनाव प्रबंधन के साथ, और भगवद्गीता के 'स्थितप्रज्ञ' सिद्धांत का भावनात्मक स्थिरता के साथ तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। शोध यह स्पष्ट करता है कि ऋग्वेद का 'संगठन सूक्त' और चाणक्य का 'राजधर्म' आधुनिक टीम वर्क और नैतिक नेतृत्व (Ethical Leadership) के उत्कृष्ट मॉडल हैं। कौशल विकास की वर्तमान प्रक्रिया को यदि प्राचीन भारतीय मूल्यों जैसे 'सा विद्या या विमुक्तये' और 'वसुधैव कुटुंबकम्' के साथ एकीकृत किया जाए, तो यह न केवल व्यक्ति की व्यावसायिक क्षमता में वृद्धि करेगा, बल्कि उसे एक जिम्मेदार वैश्विक नागरिक के रूप में भी विकसित करेगा। अंततः, यह शोध पत्र नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के आलोक में प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के समन्वय को 21वीं सदी की चुनौतियों का एकमात्र स्थायी समाधान सिद्ध करता है।

मुख्य शब्द: कौशल विकास, प्राचीन भारतीय दर्शन, 21वीं सदी के कौशल, अष्टांग योग, भगवद्गीता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति।

1. प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी का युग मानव इतिहास के सबसे क्रांतिकारी परिवर्तनों का साक्षी है। सूचना प्रौद्योगिकी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और वैश्वीकरण ने न केवल हमारे जीने के ढंग को बदला है, बल्कि सफलता के मानकों को भी पुनर्परिभाषित किया है। आज के इस प्रतिस्पर्धी युग में 'कौशल विकास' (Skill Development) को आर्थिक प्रगति की आधारशिला माना जा रहा है। हालाँकि, जैसे-जैसे हम तकनीकी रूप से उन्नत हो रहे हैं, समाज में मानसिक तनाव, नैतिक पतन, और उद्देश्यहीनता जैसी गंभीर समस्याएँ भी उभर रही हैं। यहीं पर प्राचीन भारतीय दार्शनिक मूल्यों की प्रासंगिकता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

प्राचीन भारत की दार्शनिक परंपराएँ—चाहे वह वेदों का ज्ञान हो, उपनिषदों का चिंतन हो, या बौद्ध और जैन दर्शन की नैतिकता—केवल धार्मिक कर्मकांडों तक सीमित नहीं थीं। वे 'जीवन जीने की कला' और 'मानव निर्माण' का विज्ञान थीं। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति (गुरुकुल) का मूल मंत्र था— "सा विद्या या विमुक्तये", अर्थात शिक्षा वही है जो व्यक्ति को अज्ञान और संकीर्णता के बंधनों से मुक्त कर उसका सर्वांगीण विकास करे।

वर्तमान में, विश्व आर्थिक मंच (WEF) और यूनेस्को जैसे वैश्विक संगठन जिन '21वीं सदी के कौशलों' (जैसे सहानुभूति, आलोचनात्मक सोच, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नेतृत्व) पर जोर दे रहे हैं, उनके बीज हज़ारों वर्ष पूर्व भारतीय ऋषियों ने 'स्थितप्रज्ञ', 'यमनियम' और 'पुरुषार्थ' जैसी अवधारणाओं में बो दिए थे। आधुनिक कौशल जहाँ व्यक्ति को 'कुशल' बनाते हैं, वहीं भारतीय मूल्य उसे 'विवेकशील' बनाते हैं। यह शोध पत्र इस मूल विचार पर केंद्रित है कि आधुनिक तकनीकी कौशल और प्राचीन भारतीय नैतिक मूल्यों का समन्वय ही एक ऐसे संतुलित समाज का निर्माण कर सकता है, जो न केवल आर्थिक रूप से संपन्न हो, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक रूप से भी सुदृढ़ हो। 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें भविष्य की ओर देखते हुए अपनी जड़ों की ओर लौटना अनिवार्य है।

2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार निर्धारित किए गए हैं:

***Corresponding Author:** मंजुलता गुप्ता

i). **प्राचीन भारतीय दार्शनिक मूल्यों का अन्वेषण करना:** वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता और अन्य भारतीय दर्शनों में निहित उन शाश्वत मूल्यों की पहचान करना जो मानव विकास के आधार रहे हैं।

ii). **21वीं सदी के प्रमुख कौशलों का विश्लेषण करना:** आधुनिक वैश्विक परिदृश्य (WEF, UNESCO के मानकों) में आवश्यक कौशलों—जैसे आलोचनात्मक सोच, सृजनात्मकता, सहयोग और संवाद—की वर्तमान स्थिति और आवश्यकता का परीक्षण करना।

iii). **दार्शनिक मूल्यों और आधुनिक कौशलों के मध्य अंतर्संबंधों का अध्ययन करना:** यह विश्लेषण करना कि प्राचीन मूल्य (जैसे 'नेति-नेति', 'स्थितप्रज्ञ', 'यमनियम') किस प्रकार आधुनिक जीवन कौशलों (Life Skills) को वैज्ञानिक और नैतिक आधार प्रदान करते हैं।

3. शोध विधि

यह शोध मुख्य रूप से गुणात्मक (Qualitative) और वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical) प्रकृति का है। इसमें ऐतिहासिक और दार्शनिक तथ्यों का वर्तमान संदर्भ में विश्लेषण किया गया है।

4. 21वीं सदी के प्रमुख कौशल

21वीं सदी के कार्यक्षेत्र और सामाजिक परिवेश में सफलता प्राप्त करने के लिए केवल पारंपरिक शैक्षणिक ज्ञान (Academic Knowledge) पर्याप्त नहीं है। तीव्र गति से बदलती तकनीक और स्वचालन (Automation) के इस दौर में उन कौशलों की मांग बढ़ी है जिन्हें मशीनें प्रतिस्थापित नहीं कर सकतीं। वैश्विक स्तर पर इन कौशलों को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

शिक्षण एवं नवाचार कौशल (The 4Cs): आधुनिक शिक्षाविदों के अनुसार, किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए चार कौशल अनिवार्य हैं:

- **आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking):** समस्याओं का तार्किक विश्लेषण करना और साक्ष्यों के आधार पर निर्णय लेना।
- **सृजनात्मकता (Creativity):** लीक से हटकर सोचना और नवीन समाधान खोजना।
- **सहयोग (Collaboration):** विविधतापूर्ण समूहों के साथ मिलकर काम करना।
- **संप्रेषण (Communication):** अपने विचारों को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से व्यक्त करना।

साक्षरता कौशल (Literacy Skills): इसमें सूचना साक्षरता (Information Literacy), मीडिया साक्षरता और सबसे महत्वपूर्ण 'तकनीकी साक्षरता' शामिल है। सूचना के महासागर में सही और गलत की पहचान करना आज एक अनिवार्य कौशल बन चुका है।

जीवन कौशल (Life Skills): ये कौशल व्यक्ति के व्यक्तित्व और लचीलेपन (Resilience) से संबंधित हैं। इनमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence), नेतृत्व क्षमता, अनुकूलनशीलता (Adaptability) और सामाजिक उत्तरदायित्व शामिल हैं।

21वीं सदी के इन कौशलों का मूल उद्देश्य व्यक्ति को केवल 'जीविकोपार्जन' के योग्य बनाना नहीं, बल्कि उसे एक 'सतत शिक्षार्थी' (Lifelong Learner) बनाना है। आज के युग में 'Unlearn' और 'Re-learn' करने की क्षमता ही सबसे बड़ा कौशल मानी जा रही है, जो व्यक्ति को अनिश्चितता के दौर में भी प्रासंगिक बनाए रखती है।

यहाँ शोध पत्र के तृतीय खंड 'प्राचीन भारतीय दार्शनिक मूल्य: एक अवलोकन' का संक्षिप्त एवं सारगर्भित विवरण दिया गया है:

5. प्राचीन भारतीय दार्शनिक मूल्य: एक अवलोकन

प्राचीन भारतीय दार्शनिक चिंतन का केंद्र केवल भौतिक उन्नति नहीं, बल्कि मनुष्य का सर्वांगीण और आंतरिक रूपांतरण रहा है। प्राचीन 'गुरुकुल' पद्धति का मूल उद्देश्य जानकारी का संचय (Information Gathering) नहीं, बल्कि 'शील' या चरित्र निर्माण था। इस दर्शन के प्रमुख स्तंभ निम्नलिखित हैं:

i). **विद्या की अवधारणा:** भारतीय मनीषा का मानना है— "सा विद्या या विमुक्तये"। इसका अर्थ है कि वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को मानसिक संकीर्णता, भय, और अज्ञानता के बंधनों से मुक्त करे। यह विचार आधुनिक 'स्वतंत्र चिंतन' (Independent Thinking) का मूल है।

ii). **पुरुषार्थ चतुष्टय:** जीवन को संतुलित बनाने के लिए 'धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष' का सिद्धांत दिया गया। यह सिखाता है कि आर्थिक संपन्नता (अर्थ) और इच्छाओं की पूर्ति (काम) सदैव नैतिक मूल्यों (धर्म) के अधीन होनी चाहिए, ताकि अंततः मानसिक शांति (मोक्ष) प्राप्त हो सके।

iii). **स्थितप्रज्ञ की अवधारणा:** भगवद्गीता का यह सिद्धांत आज के तनावपूर्ण युग में अत्यंत प्रासंगिक है। 'स्थितप्रज्ञ' वह व्यक्ति है जो सुख-दुख, लाभ-हानि और सफलता-असफलता जैसी विपरीत परिस्थितियों में भी अपना मानसिक संतुलन बनाए रखता है। यह आधुनिक 'Resilience' और भावनात्मक स्थिरता का आधार है।

iv). **वसुधैव कुटुंबकम्:** "उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्" (उदार हृदय वालों के लिए पूरी पृथ्वी ही परिवार है) का भाव व्यक्ति को संकुचित राष्ट्रवाद से ऊपर उठाकर 'वैश्विक नागरिकता' (Global Citizenship) की भावना से जोड़ता है, जो 21वीं सदी के वैश्विक सहयोग के लिए अनिवार्य है।

यहाँ शोध पत्र के चतुर्थ खंड 'विश्लेषणात्मक अध्ययन' का विस्तार दिया गया है, जो प्राचीन दर्शन और आधुनिक कौशलों के मध्य सेतु का कार्य करता है:

6. विश्लेषणात्मक अध्ययन: प्राचीन मूल्य बनाम आधुनिक कौशल

21वीं सदी के कौशल और प्राचीन भारतीय मूल्य परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। इनका विश्लेषणात्मक अध्ययन निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से किया जा सकता है:

(A) आलोचनात्मक सोच और 'उपनिषदिक' पद्धति: आधुनिक 'Critical Thinking' का अर्थ है किसी भी तथ्य को बिना जांचे स्वीकार न करना। उपनिषदों की 'नेति-नेति' (यह सत्य नहीं है, यह भी पूर्ण सत्य नहीं है) की पद्धति और 'श्रमण' परंपरा इसी जिज्ञासा और निरंतर प्रश्न पूछने की शक्ति को प्रोत्साहित करती है। यह तर्क आधारित दृष्टिकोण व्यक्ति को सूचनाओं के अंबार में से सत्य को खोजने की क्षमता प्रदान करता है।

(B) भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EQ) और 'योग' दर्शन: आज के उच्च-तनाव वाले कार्य वातावरण में 'Emotional Intelligence' सफलता की कुंजी है। महर्षि पतंजलि का अष्टांग योग, विशेषकर 'यम' (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) और 'नियम', व्यक्ति को आंतरिक अनुशासन और आत्म-नियंत्रण सिखाते हैं। यह केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि 'Stress Management' और मानसिक स्पष्टता का एक वैज्ञानिक ढांचा है।

(C) टीम वर्क और 'संगठन' सूक्त: आधुनिक 'Collaboration' का प्राचीनतम बीज ऋग्वेद के 'संगठन सूक्त' में मिलता है— "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्" (साथ चलें, साथ बोलें

और हमारे मन एक हों)। यह सूत्र सामूहिक चेतना और प्रभावी संवाद (Effective Communication) को रेखांकित करता है, जो आज के बहुसांस्कृतिक कार्यस्थलों (Diverse Workplaces) के लिए अपरिहार्य है।

(D) नेतृत्व और 'राजधर्म': चाणक्य के अर्थशास्त्र का सूत्र—"प्रजासुखे सुखं राज्ञः"— आधुनिक नेतृत्व शैलियों जैसे 'Servant Leadership' (सेवक नेतृत्व) और 'Ethical Leadership' (नैतिक नेतृत्व) का मूल आधार है। यह सिखाता है कि एक नेता का अस्तित्व और सफलता उसकी टीम या प्रजा के कल्याण और विश्वास में निहित है, न कि केवल अधिकार के प्रदर्शन में।

इस प्रकार, प्राचीन मूल्य आधुनिक कौशलों को एक 'नैतिक धरातल' प्रदान करते हैं, जिससे कौशल का उपयोग केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक हित में संभव हो पाता है।

यहाँ शोध पत्र के पांचवें खंड 'शिक्षा के क्षेत्र में एकीकरण' का विस्तृत आलेखन दिया गया है:

7. शिक्षा के क्षेत्र में एकीकरण (Implementation in Education)

प्राचीन भारतीय दार्शनिक मूल्यों और 21वीं सदी के कौशलों का प्रभावी एकीकरण ही वर्तमान शिक्षा प्रणाली की विसंगतियों को दूर कर सकता है। केवल सैद्धांतिक चर्चा पर्याप्त नहीं है, बल्कि इन्हें शिक्षण पद्धति (Pedagogy) के मूल ढांचे में शामिल करना आवश्यक है।

i). **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) का संदर्भ:** भारत की नई शिक्षा नीति इस दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह नीति 'समग्र शिक्षा' (Holistic Education) की बात करती है, जो प्राचीन 'बहुआयामी ज्ञान' और आधुनिक 'तार्किक सोच' का मिश्रण है। इसमें स्पष्ट रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने पर बल दिया गया है, ताकि छात्र अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर वैश्विक चुनौतियों का सामना कर सकें।

ii). **मूल्य आधारित व्यावसायिक शिक्षा:** शिक्षा का एकीकरण इस प्रकार होना चाहिए कि तकनीकी कौशल (Hard Skills) के साथ 'धर्म' (नैतिक कर्तव्य) का बोध भी कराया जाए। उदाहरण के लिए, जब एक छात्र को कोडिंग या AI सिखाया जाए, तो उसे साथ ही 'एथिक्स' (Ethics) और 'सामाजिक उत्तरदायित्व' भी पढ़ाया जाना चाहिए, जैसा कि प्राचीन काल में अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा के साथ उनके उचित प्रयोग के नैतिक नियम सिखाए जाते थे।

iii). **अनुभवात्मक और सचेत अधिगम (Experiential and Mindful Learning):** विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में 'योग' और 'ध्यान' को केवल शारीरिक शिक्षा तक सीमित न रखकर उन्हें 'मानसिक स्वास्थ्य' और 'एकाग्रता' बढ़ाने के उपकरण के रूप में एकीकृत किया जाना चाहिए। 'प्रश्नोत्तर पद्धति' (उपनिषदिक शैली) को कक्षाओं में प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि छात्रों में रटने की प्रवृत्ति के बजाय जिज्ञासा और अनुसंधान (Research) की भावना जागृत हो।

iv). **शिक्षक की भूमिका—'गुरु' के रूप में:** आधुनिक शिक्षा में शिक्षक को केवल एक 'सुविधाप्रदाता' (Facilitator) माना जाता है, जबकि प्राचीन भारतीय परंपरा में गुरु एक 'प्रेरक' (Mentor) होता था। एकीकरण की प्रक्रिया में शिक्षक को छात्रों के चरित्र निर्माण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास के लिए एक रोल मॉडल के रूप में कार्य करना होगा।

यहाँ शोध पत्र के छठे खंड 'चुनौतियाँ और समाधान' का विस्तृत विश्लेषणात्मक विवरण दिया गया है:

8. चुनौतियाँ और समाधान

प्राचीन भारतीय दार्शनिक मूल्यों को आधुनिक कौशल विकास के ढांचे में समाहित करना जितना अनिवार्य है, उतना ही चुनौतीपूर्ण भी। इस मार्ग में कई वैचारिक और व्यावहारिक बाधाएँ हैं, जिनका समाधान तार्किक दृष्टिकोण से करना आवश्यक है।

चुनौतियाँ (Challenges)

i). **रूढ़िवादिता और सांप्रदायिकता का डर:** आधुनिक समाज में अक्सर प्राचीन मूल्यों को केवल 'धार्मिक कर्मकांड' के चश्मे से देखा जाता है। इस कारण, शैक्षणिक संस्थानों में इन्हें लागू करने पर 'भगवाकरण' या रूढ़िवादिता के आरोप लगने का भय बना रहता है। यह धारणा इसके वैज्ञानिक और दार्शनिक पक्ष को गौण कर देती है।

ii). **पश्चिमीकरण और 'अंधानुकरण' का प्रभाव:** वैश्वीकरण के दौर में शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक पश्चिमी हो गया है। 'सफलता' की परिभाषा केवल भौतिक समृद्धि और विदेशी मानकों तक सिमट गई है। इस मानसिक गुलामी के कारण छात्र और अभिभावक अपनी जड़ों की शिक्षा को 'पिछड़ा' या 'अप्रासंगिक' समझने लगते हैं।

iii). **गलत व्याख्या और विरूपण:** प्राचीन ग्रंथों की समय-समय पर संकीर्ण या गलत व्याख्याएं की गई हैं। बिना संदर्भ के श्लोकों या सूत्रों का उपयोग करने से उनकी मूल भावना नष्ट हो जाती है, जिससे युवा पीढ़ी में इन मूल्यों के प्रति भ्रम और विरक्ति पैदा होती है।

समाधान (Solutions)

i). **दर्शन को 'जीवन कौशल' के रूप में प्रस्तुतीकरण:** सबसे प्रभावी समाधान यह है कि प्राचीन मूल्यों को किसी विशिष्ट धर्म से जोड़ने के बजाय उन्हें 'Universal Life Skills' (सार्वभौमिक जीवन कौशल) के रूप में प्रस्तुत किया जाए। उदाहरण के लिए, 'योग' को एक शारीरिक-मानसिक विज्ञान और 'गीता' के 'कर्म योग' को प्रबंधन (Management) के सिद्धांत के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए।

ii). **धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक दृष्टिकोण:** प्राचीन ज्ञान को विज्ञान और मनोविज्ञान के तर्क पर कसना होगा। जब हम अष्टांग योग के लाभों को 'न्यूरोसाइंस' के माध्यम से समझाते हैं, तो उसकी स्वीकार्यता वैश्विक और वैज्ञानिक हो जाती है।

iii). **शिक्षण सामग्री का आधुनिकीकरण:** प्राचीन मूल्यों को आधुनिक उदाहरणों, केस स्टडीज और डिजिटल मीडिया के माध्यम से छात्रों तक पहुँचाना चाहिए। उपनिषदों की कहानियों को आधुनिक समस्याओं (जैसे साइबर बुलिंग या पर्यावरण संकट) से जोड़कर समझाना अधिक प्रभावी होगा।

iv). **पाठ्यक्रम में सूक्ष्म एकीकरण:** मूल्यों को एक अलग विषय के रूप में बोझ बनाने के बजाय, उन्हें मौजूदा विषयों के साथ एकीकृत (Integrate) करना चाहिए—जैसे अर्थशास्त्र के साथ चाणक्य के नीति शास्त्र का अध्ययन।

9. निष्कर्ष

इस शोध पत्र के विश्लेषणात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 21वीं सदी की तकनीकी प्रगति और प्राचीन भारतीय दार्शनिक मूल्य परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक प्रगतिशील समाज के दो अनिवार्य पहिए हैं। जहाँ आधुनिक कौशल (Hard and Soft Skills) व्यक्ति को बाहरी जगत में प्रतिस्पर्धा करने और जीविकोपार्जन के योग्य बनाते हैं, वहीं प्राचीन भारतीय मूल्य उसे आंतरिक स्थिरता, चारित्रिक सुदृढ़ता और वैश्विक उत्तरदायित्व का बोध कराते हैं।

अध्ययन यह रेखांकित करता है कि 'आलोचनात्मक सोच' के मूल

उपनिषदों की तर्क पद्धति में छिपे हैं, और 'भावनात्मक बुद्धिमत्ता' का उच्चतम स्वरूप पतंजलि के योग दर्शन में उपलब्ध है। आज का कॉर्पोरेट जगत जिस टीम वर्क और नेतृत्व की बात कर रहा है, उसका आदर्श ऋग्वेद के संगठन सूक्त और चाणक्य के राजधर्म में हज़ारों वर्ष पूर्व ही स्थापित किया जा चुका था। अतः इन मूल्यों का पुनरुद्धार कोई 'अतीत की ओर वापसी' नहीं, बल्कि 'भविष्य की ओर एक सचेत कदम' है।

21वीं सदी की सबसे बड़ी चुनौती—मानसिक अवसाद और अनैतिक प्रतिस्पर्धा—का समाधान केवल तकनीक के पास नहीं है। इसके लिए हमें 'स्थितप्रज्ञ' जैसी मानसिक अवस्था और 'वसुधैव कुटुंबकम्' जैसी उदार वैश्विक दृष्टि की आवश्यकता है। शिक्षा के क्षेत्र में इन मूल्यों का वैज्ञानिक और धर्मनिरपेक्ष एकीकरण समय की मांग है।

10. निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता आज पहले से कहीं अधिक है। यदि हम इन कालजयी मूल्यों को आधुनिक कौशल विकास के साथ सफलतापूर्वक जोड़ पाते हैं, तो हम न केवल एक कुशल कार्यबल तैयार करेंगे, बल्कि एक ऐसे प्रबुद्ध वैश्विक समाज का निर्माण भी कर सकेंगे जो शांति, सद्भाव और सतत विकास के मार्ग पर अग्रसर हो। भारत का यह 'प्राचीन-आधुनिक' समन्वय ही आने वाले समय में विश्व गुरु के रूप में उसकी नई पहचान बनेगा।

सन्दर्भ सूची

1. राधाकृष्णन, एस. (1923). भारतीय दर्शन (भाग 1 और 2)। राजपाल एंड संस, दिल्ली।
2. चाणक्य. अर्थशास्त्र (अनुवादक: आर. शमाशास्त्री)। ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर।
3. विवेकानंद, स्वामी. (2015). शिक्षा का अर्थ और उद्देश्य। रामकृष्ण मिशन प्रकाशन।
4. श्रीमद्भगवद्गीता. (शांकर भाष्य सहित)। गीता प्रेस, गोरखपुर।
5. पतंजलि. योगसूत्र (व्यास भाष्य सहित)। भारतीय विद्या भवन, मुंबई।
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
7. गोलेमैन, डैनियल. (1995). इमोशनल इंटेलिजेंस: व्हाई इट कैन मैटर मोर दैन आईक्यू। बैंटम बुक्स (भावनात्मक बुद्धिमत्ता के वैश्विक परिप्रेक्ष्य के लिए)।
8. ऋग्वेद संहिता. (संगठन सूक्त एवं नागरिक धर्म के संदर्भ हेतु)। चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
9. विश्व आर्थिक मंच (WEF). (2023). द फ्यूचर ऑफ जॉब्स रिपोर्ट। जिनेवा।
10. अरबिंदो, श्री. (1956). ऑन एजुकेशन। श्री अरबिंदो आश्रम, पुडुचेरी।
11. शर्मा, पी.के. (2018). 21वीं सदी के कौशल और भारतीय ज्ञान परंपरा। नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया।
12. यूनेस्को (UNESCO). (2015). रीथिंकिंग एजुकेशन: टूवार्ड्स ए ग्लोबल कॉमन गुड?। पेरिस।
13. काणे, पी.वी. (1962). धर्मशास्त्र का इतिहास। भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे।
14. गांधी, एम.के. (1937). नई तालीम (बुनियादी शिक्षा)। नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।